

प्रेमचंदकालीन उपन्यासों पर समकालीन वैचारिक प्रभावों का मूल्यांकन

डॉ. मुकेश कुमार

असि. प्रो. हिंदी

विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कैराना, शामली

mukeshkrjnu@gmail.com

बीजशब्द : भावना, सामूहिक, गांधीवाद, अभिव्यक्ति, वैचारिकी, शोषण, हत्याकांड, समकालीन, परतंत्रता, राष्ट्रीय.

प्रेमचंद कालीन उपन्यासों में गुलामी के आतंक से मुक्ति का आह्वान है। इसके लिए उपन्यासकारों ने भारतीय अतीत के गौरव को जागृत करने वाले आख्यानो के साथ ही गांधी जी जैसे आजादी के समर्थकों के विचारों को भी अपने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है, जिससे आजादी की भावना का विस्तार जन जन में हो सके। बीज शब्द गुलामी, शोषण, वैचारिकी, अभिव्यक्ति, समकालीन, राजतन्त्र, सामूहिकता, हत्याकांड, आंदोलन। प्रेमचंद-युग में मुख्य रूप से सामाजिक उपन्यासों की सर्जना हुई है, किन्तु प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से गांधी, मार्क्स तथा टॉल्स्टाय का वैचारिक प्रभाव पड़ा है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' तथा निराला आदि के उपन्यासों में हुई है। इस युग के लेखक तत्कालीन समकालीन आंदोलनों से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। उन्होंने उस प्रभाव को अपने रंग में रंगकर प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद युग भारतीय परतंत्रता का युग था। वस्तुतः जब देश परतंत्र हो तो विदेशी शासकों के साथ संघर्ष करने के लिए सामूहिक संगठन की आवश्यकता होती है। संघर्ष में व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं होता। उपन्यास के इस द्वितीय उत्थान के आरम्भ में देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा था वैसी परिस्थितियों में जो कुछ भी सोचा जा रहा था, वह सामूहिक दृष्टिकोण से ही सोचा जा सकता था। गांधीवाद समष्टि का विकास चाहता था, समाज के कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण है। यही भावना उन जन-आंदोलनों के साथ थी। राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् सन 1919 में सर्वप्रथम गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन सम्पूर्ण भारतीय जनता का आंदोलन बना। इससे पूर्व बंग-भंग आंदोलन मुख्यतः बंगाल तक ही सीमित था। गांधीजी सत्याग्रह युद्ध-पद्धति पर दमनकारी रोलेट एक्ट का विरोध कर रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह पहला अवसर था कि राष्ट्रीय नेता को जनता का इतना व्यापक समर्थन मिला, जिसे देखकर सरकार भी आश्चर्य में पड़ गई। जनता के उत्साह ने हिंसात्मक मार्ग पकड़ा तथा सरकार ने पंजाब हत्याकांड रच डाला। फलतः गांधीजी को यह कहना पड़ा कि उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन छोड़कर हिमालय के समान गलती की और आंदोलन को वापस ले लिया।